सोहनलाल कमोडिटी ने एनबीएफसी के जरिए 130 करोड़ का किया वितरण

अजीत सिंह, मुंबई। भारतीय एग्री लॉजिस्टिक्स समूह सोहनलाल कमोडिटी मैनेजमेंट प्रा. लि. ने भारत और अन्य कृषि आधारित वाले देशों में वैज्ञानिक वेयरहाउसिंग प्रक्रिया को अमल में लाते हुए पैदावार के बाद होने वाले नुकसानों को कम करने की जिम्मेदारी उठाई है।

साथ ही अपनी गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी की सब्सिडियरी किसान धन के जरिए साल 2014-15 में कुल 130 करोड़ रुपए से अधिक का कर्ज वितरण किया है। एसएलसीएम ग्रुप के सीईओ संदीप सवरवाल ने बताया कि दरअसल विश्व में कई देश हैं जिनके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहता है और ऐसे में कई देशों में संसाधन की कमी, कम यील्ड्स और पैदावार के बाद कमजोर प्रबंधन एक प्रमुख चुनौती बन गया है। जिसकी वजह से सोहनलाल कमोडिटी इन देशों में पैदावार के बाद होने वाले नुकसान को बचाने के लिए आगे आया है और इसे 0.5 फीसदी तक कम किया जा सकता है। पैदावार के बाद सालाना प्रति हेक्टेयर बिना किसी यील्ड को बढ़ाए 76,000 करोड़ रुपए की बचत हो सकती है। किसानधन एग्री कमोडिटी के लिए वित्तीय समाधान की मुहैया कराता है। श्री सवरवाल ने बताया कि सोहनलाल कमोडिटी मार्च 2014 में अपने एनबीएफसी किसान धन में 50 करोड़ रुपए की पूंजी डाली थी और 2014-15 में उसने अपनी स्थापना के महज 8 महीने में ही 130 करोड़ रुपए का कर्ज वितरण किया था जो कि आने वाले साल में 300 फीसदी बढ़ने की उम्मीद है।

किसानधन की टिकट साइज छोटे आकार में 42 लाख रुपए का है जबकि ऊपरी सेगमेंट में यह 5-7 करोड़ रुपए है और औसत टिकट साइज 2.5 करोड़ रुपए है। किसान धन पूरे भारत में कर्ज का वितरण करता है जिसमें ढेर सारी कमोडिटी हैं और इनमें दाल, गेहूं, चना, सरसो आदि का समावेश है। कंपनी के पास इस समय 65 से अधिक ग्राहक है। फिक्की के एक अध्ययन के मुताबिक सोहनलाल कमोडिटी द्वारा वैज्ञानिक वेयर हाउसिंग के उपयोग की प्रक्रिया से वर्तमान ढांचे में स्टोरेज का नुकसान 10 फीसदी से घटाकर 0.5 फीसदी तक आ सकता है और इससे सालाना 76,000 करोड़ रुपए की बचत हो सकती है। कंपनी ने एग्री रीच के पेटेंट के लिए भी आवेदन किया है जो अभी लंबित है। किसान धन किसानों को यह विकल्प मुहैया कराता है कि वे अपनी फसल को कम समय के लिए स्टोर करें और शॉर्ट टर्म वित्त अपनी कमोडिटी पर लें। यह उन्हें मूल्य का खुलासा करने में सक्षम बनाता है और साथ ही जब इन फसलों की अच्छी कीमत मिले तब ये बेच सकते हैं।

કિશાનધન દ્વારા રૂ.૧૩૦ કરોડની લોન વહેંચણી કરાઈ

મુંબઈતા. ૨૪

વિશ્વનાઘણાદેશો કૃષિ આધારીતછે અને જીડીપીમાં કૃષિનો મહત્તમ હિસ્સો ધરાવે છે અને આ પૈકી ઘણા દેશો કૃષિ પાક લીધા બાદ નબળા ઈન્ફ્રાસ્ટ્રકચર એ ઓછા પાકસાથે નબળા વહીવટસહિતના અનેક પડકારોનો સામનો કરીરહ્યા છે. પરંતુ ભારતના એગ્રીલોજીસ્ટિક ગ્રુપ સોહનલાલ કોમોડિટી મેનેજમેન્ટપ્રાઈવેટ લિમિટેડે(એસએલસીએમ) દ્વારા કૃષિ પાક લીધા બાદ થતાં નુકશાનને સાયન્ટિફિકવે રહાઉસીંગ પ્રોસેસ થકી ઘટાડવાની જવાબદારી સ્વીકારી આ દિશામાં પ્રયાસ કર્યા છે. એસએલસીએમની સંપૂર્ણ માલિકીની સબસીડિયરી એનબીએફસી કિશાનધન દ્વારા વર્ષ ૨૦૧૪-૧૫માં રૂ.૧૩૦કરોડથી વધુ લોનની વહેંચણી કરાઈ છે. કૃષિ કોમોડિટીઝ માટે એસએલસીએમ ફાઈનાન્શિયલ સોલ્યુશન્સ ઓફર કરે છે. જેણે તેના એનબીએફસી ડિવિઝન કિશાનધનમાં માર્ચ ૨૦૧૪માં રૂ.૫૦ કરોડની મૂડી લાવી હતી. આ સબસીડિયરીએ૮ મહિનામાં વર્ષ ૨૦૧૪-૧૫માં રૂ.૧૩૦ કરોડથી વધુ લોનની વહેંચણી કરી છે. જેમાં કઠોળ, ઘઉં, ચણા, એરંડા સહિતના ઘણાં પાકને વિવિધ રાજ્યોમાં આવરી લેવાયા છે.